विचार बिन्दु

त्याग यह नहीं कि मोटे और खुरदरे वस्त्र पहन लिए जायें और सूखी रोटी खायी जाये, त्याग तो यह है कि अपनी इच्छा अभिलाषा और तृष्णा को जीता जाये। –सुफियान सौरी

जीवनदात्री प्रकृति की सुरक्षा और संरक्षण आवश्यक

पृथ्वी पर जीवन को बनाए रखने में प्रकृति की भूमिका महत्वपूर्ण है। प्रकृति में वह सब कुछ शामिल है जो हमें चारों ओर से घेरे हुए है। पेड़, जंगल, नदियाँ, नाले, मिट्टी, हवा सब प्रकृति का हिस्सा हैं। प्रकृति और उसके संसाधनों को अभिन्न बनाए रखना। इसलिए, पृथ्वी पर जीवन की निरंतरता के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण है। ख़राब प्राकृतिक पर्यावरण वाली पृथ्वी पर जीवन की कल्पना करना कठिन होगा। प्रकृति का संरक्षण हमारे सुनहरे भविष्य का आधार है। मनुष्य जन्म से ही प्रकृति और पर्यावरण के सम्पर्क में आ जाता है। प्राणी जीवन की रक्षा हेतु प्रकृति की रक्षा अति आवश्यक है। वर्तमान समय में विभिन्न प्रजाति के जीव-जंतु, वनस्पतियां और पेड़-पौधे विलुप्त हो रहे हैं जो प्रकृति के संतुलन के लिए बहुत ही भयावह है। मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए समय-समय पर प्रकृति का दोहन करता चला आ रहा है। अगर प्रकृति के साथ खिलवाड़ होता रहा तो वह दिन दूर नहीं जब हमें शुद्ध पानी, हवा, उपजाऊ भूमि, शुद्ध पर्यावरण वातवरण एवं शुद्ध वनस्पतियाँ नहीं मिल सकेंगी। इन सबके बिना हमारा जीवन जीना मुश्किल हो जायेगा। प्रकृति हमारे जीवन का आधार है।

विभिन्न प्राकृतिक संसाधन जैसे कि जल, वन्यजीवन, वन, खेती, वायु आदि हमारी जरूरतों को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हमारी सांसें जल से भरी हुई हैं और हमारी खाद्य आपूर्ति भी खेती द्वारा उत्पन्न होती है। इसलिए, हमें प्रकृति के साथ संतुलन बनाए रखने की जरूरत है ताकि हम समृद्धि और सुख-शांति के साथ जीवन जी सकें। जलवायु परिवर्तन एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। ग्लोबल वार्मिंग, प्रदूषण और लुप्तप्राय और विलुप्त होने वाली प्रजातियां प्रकृति में भारी असंतुलन पैदा कर रही हैं। प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा करने और यह सुनिश्चित करने के लिए अपनी पूरी कोशिश करने के लिए कि पृथ्वी हमारी प्रथाओं से नकारात्मक रूप से प्रभावित न हो, हमें प्रकृति वार्तालाप शुरू करने की आवश्यकता है।

प्रकृति से हमारा तात्पर्य जल, जंगल और जमीन से है। हम लगातार प्रकृति का दोहन करते जा रहे हैं जिससे मानव जीवन संकट में पड़ गया है। जल, जंगल और जमीन के बिना प्रकृति अधूरी है। जल को व्यर्थ में बहा रहे हैं जंगलों को काट रहे हैं और जमीन पर जहरीले कीटनाशक का उपयोग करके उसकी उर्वरक क्षमता और उपजाऊ शक्ति को कमजोर कर रहे हैं। हम एक अर्से से प्रकृति दिवस मना रहे हैं और लोगों को प्रकृति संरक्षण का संदेश दे रहे हैं। लेकिन इसके बावजूद प्रकृति पर मंडराता खतरा जस का तस बना हुआ है। सबसे बड़ा खतरा तो इसे ग्लोबल वार्मिंग से है। धरती के तापमान में लगातार बढ़ते स्तर को ग्लोबल वार्मिंग कहते है। वर्तमान में ये पूरे विश्व के समक्ष बड़ी समस्या के रुप में उभर रहा है। ऐसा माना जा रहा है कि धरती के वातावरण के गर्म होने का मुख्य कारण का ग्रीनहाउस गैसों के स्तर में वृद्धि है। इसे लगातार नजरअंदाज किया जा रहा है जिससे प्रकृति पर खतरा बढ़ता जा रहा है। ये आपदाएँ पृथ्वी पर ऐसे ही होती रहीं तो वह दिन दूर नहीं जब पृथ्वी से जीव-जन्तु व वनस्पति का अस्तिव ही समाप्त हो जाएगा।

प्रकृति से हमारा तात्पर्य जल, जंगल और जमीन से है। हम लगातार प्रकृति का दोहन करते जा रहे हैं जिससे मानव जीवन संकट में पड़ गया है। जल, जंगल और जमीन के बिना प्रकृति अधूरी है। जल को व्यर्थ में बहा रहे हैं जंगलों को काट रहे हैं और जमीन पर जहरीले कीटनाशक का उपयोग करके उसकी उर्वरक क्षमता और उपजाऊ शक्ति को कमजोर कर रहे हैं। हम एक अर्से से प्रकृति दिवस मना रहे हैं और लोगों को प्रकृति संरक्षण का संदेश दे रहे हैं। लेकिन इसके बावजूद प्रकृति पर मंडराता खतरा जस का तस बना हुआ है।

प्रकृति के संरक्षण का अर्थ है कि वनों, भूमि, जल निकायों का संरक्षण और खनिजों, ईंधन, प्राकृतिक गैसों आदि जैसे संसाधनों का संरक्षण, यह सुनिश्चित करने के लिए कि ये सभी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध रहें। ऐसे कई तरीके हैं जिनसे आम आदमी प्रकृति के संरक्षण में मदद कर सकता है। इनमें से कुछ ऐसे हैं जो आसानी से किए जा सकते हैं और एक बहुत बड़ा बदलाव ला सकते हैं। प्रकृति हमें पानी, भूमि, सूर्य का प्रकाश और पेड़-पौधे प्रदान करके हमारी बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करती है। इन संसाधनों का उपयोग विभिन्न चीजों के निर्माण के लिए किया जा सकता है जो निश्चित ही मनुष्य के जीवन को अधिक सुविधाजनक और आरामदायक बनाते हैं। प्रकृति के संरक्षण से अभिप्राय जंगलों, भूमि, जल निकायों की सुरक्षा से है तथा प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण खनिजों, ईंधन, प्राकृतिक गैसों जैसे संसाधनों की सुरक्षा से है जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि ये सब प्रचुर मात्रा में मनुष्य के उपयोग के लिए उपलब्ध रहें।

ऐसे कई तरीके हैं जिससे आम आदमी प्रकृति के संरक्षण में मदद कर सकता है। यहां कुछ ऐसे ही तरीकों का विस्तृत वर्णन किया गया है जिससे मानव जीवन को बड़ा लाभ हो सकता है।

प्रकृति ने हमें हवा, पानी, भूमि, सूरज की रोशनी , खनिज, पौधे और जानवर जैसे कई उपहार प्रदान किए हैं । प्रकृति के ये सभी उपहार हमारी पृथ्वी को रहने लायक जगह बनाते हैं। इनमें से किसी के बिना पृथ्वी पर अस्तित्व संभव नहीं होगा। अब जबकि ये प्राकृतिक संसाधन पृथ्वी पर प्रचुर मात्रा में मौजूद हैं। पृथ्वी के पास हर इंसान की जरूरत पूरी करने के लिए काफी कुछ है, लेकिन उसके लालच को पूरा करने के लिए नहीं हैं। पृथ्वी पर पानी, हवा, मिट्टी, खनिज, पेड़, जानवर, पौधे आदि हर किस्म की जरूरत के लिए संसाधन है। लेकिन औद्योगिक विकास की होड़ में हम पृथ्वी को सफाई और उसके ही स्वास्थ्य को नजरअंदाज करने लगे हैं। हम कुछ भी करने से पहले यह बिलकुल नहीं सोचते कि हमारी उस गतिविधि से प्रकृति को कितना नकुसान होगा। प्रकृति का संरक्षण प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण से सबंधित है। इनमें मुख्यत: पानी, धूप, वातावरण, खनिज, भूमि, वनस्पति और जानवर शामिल हैं। प्रकृति हमें पानी, भूमि, सूर्य का प्रकाश और पेड़-पौधे प्रदान करके हमारी बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करती है। इन संसाधनों का उपयोग विभिन्न चीजों के निर्माण के लिए किया जा सकता है जो निश्चित ही मनुष्य के जीवन को अधिक सुविधाजनक और आरामदायक बनाते हैं।

–अतिथि सम्पादक,
बाल मुकुन्द ओझा,
(वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार)

राशिफल गुरूवार 1 फरवरी, 2024

पंडित अनिल शर्मा

माघ मास, कृष्ण पक्ष, षष्ठि तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2080, चित्रा नक्षत्र रात्रि 3:49 तक, धृति योग दिन 12:27 तक, वणिज करण 2:04 तक, चन्द्रमा 2:32 से तुला राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मकर, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-धनु, बुध-धनु, गुरू-मेष, शुक्र-धनु, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज रवियोग रात्रि 3:49 तक है। भद्रा दिन 2:04 से रात्रि 3:03 तक तक रहेगी। आज बुध मकर राशि में दिन 2:21 पर प्रवेश करेगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 8:38 तक, चर 11:19 से 12:40 तक, लाभ-अमृत 12:40 से 3:22 तक, शुभ 4:43 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 7:17, सूर्यास्त 6:04

मेष
स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। दिनचर्या में सुधार होगा। परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। दिन के मध्यान्ह पश्चात परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

सिंह
आर्थिक/वित्तीय मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। धन हानि हो सकती है। दिन के मध्यान्ह पश्चात परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

वृष
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

कन्या
व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता से मनोबल बढ़ेगा। आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।

मकर
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्य के लिए यात्रा संभव है। आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा।

मिथुन
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

तुला
व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा। दिन के मध्यान्ह पश्चात मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। आवश्यक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

कुंभ
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। दिन के मध्यान्ह पश्चात परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

कर्क
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। घर-परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक
अपने आर्थिक/वित्तीय मामलों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। दिन के मध्यान्ह पश्चात घर-परिवार के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है।

मीन
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा। दिन के मध्यान्ह पश्चात अष्टम चन्द्र शुभ नहीं ।

सदन में मोदी-शाह बने भजनलाल शर्मा

रामगोपाल जाट

लगभग डेढ़ महीने पहले जब भाजपा ने पहली बार जीते विधायक भजनलाल शर्मा को मुख्यमंत्री बनाया गया था, तब उनका नाम सुनकर हर कोई चौंक गया था। यहां तक कि यह निर्णय भाजपा के अधिकांश नेताओं के भी आसानी से गले नहीं उतरा। विधायक दल की बैठक में वसुंधरा राजे का चौंकाने वाला वीडियो आज भी सोशल मीडिया पर यदा-कदा दिखाई दे जाता है। शुरू में जब भजनलाल सार्वजनिक सभाओं में भाषण दे रहे थे, तब कुछ जगह बोलने में गलती हुई तो विपक्ष ने उनका मजाक बनाने का भी खूब प्रयास किया। कांग्रेस अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा द्वारा तो यह भी कहा गया कि अभी तो जुबान फिसल रही है, यही हालात रहे तो कुर्सी भी फिसल जाएगी, किंतु जब विधानसभा सत्र के दौरान राज्यपाल कलराज मिश्र के अभिभाषण पर बोलने की बारी आई तो भजनलाल ने सारे मिथक तोड़ दिए।

तैयारी के साथ सदन में बोलना राजनेता का सबसे मजबूत पक्ष माना जाता है, लेकिन तैयारी को भी यदि सदन में सही तरीके से प्रस्तुत किया जाए तो सोने पर सुहागा वाली कहावत चरितार्थ हो जाती है। इसमें कोई संशय नहीं है कि नेताओं को भाजपा के संगठन में परिश्रम, लगन और पूरी ईमानदारी से काम करने का लाभ मिलता ही है। भले पहली बार के विधायक हों, लेकिन तीन दशक तक संगठन में काम करने के बाद भजनलाल शर्मा के पास अनुभव की कमी तो है नहीं। ऐसे में उनके अनुभवों में सार्वजनिक जीवन की कहानियां और किस्से भी बहुत हैं, तो सदन की कार्यवाही को हंसी-मजाक से हल्का करने के लिए यही किस्से काम आते हैं। ऐसी कहानियां और किस्से सभी के जीवन का हिस्सा होते हैं, लेकिन उनको रोचकता के साथ सुनाना भी एक कला है।

आपने गौर किया होगा, जितने भी बड़े नेता हुए हैं, उनके पास उनके सार्वजनिक जीवन की कहानियां और किस्से खूब होते हैं। नेता अक्सर अपने समर्थकों के साथ जब गपशप करते हैं, तो उनके किस्से खत्म नहीं होते और यही रोचक किस्से उनको जनता से बांधे रखते हैं। अपने जीवन के घटित किस्सों को सुनाते समय व्यक्ति अधिक रोचकता ला सकता है। भजनलाल शर्मा विधानसभा में करीब दो घंटे तक बोले, और इस दौरान सदन में ठहाके भी खूब सुनाई दिए। पहली बार सदन में बोल रहे थे, लेकिन ऐसा लगा ही नहीं कि कोई पहली बार का विधायक सदन में पहली बार बोल रहा था। शुरुआत में कांग्रेसी नेताओं ने उनको कमतर आंका और कमजोर दिखाने का भी खूब प्रयास किया, लेकिन कुछ ही मिनटों में भजनलाल ने मुख्यमंत्री वाली लय पकड़ ली। उसके बाद तो विपक्ष पर कटाक्ष करके उनकी हवाइयां उड़ा दीं। नरेंद्र मोदी और अमित शाह की तरह बातें की, उनकी तरह विपक्ष की ओर इशारे किए, बल्कि खड़े रहने से लेकर विपक्ष का मजाक उड़ाने में भी वही तरीका अपनाया, जो संसद में मोदी-शाह अपनाते हैं। भाषण देखकर लोगों ने तो यहां तक कह दिया कि भजनलाल शर्मा ने दो महीने में मोदी-शाह को कॉपी कर दिया है। किंतु यह भी बहुत बड़ी बात है कि दो महीने में ही देश के दो बड़े नेताओं को इस तरह कॉपी कर दो घंटे भाषण दे दिया।

सदन में भजनलाल के भाषण की शुरुआत बेहद सकारात्मक रही है। विपक्ष के सदस्यों ने भी खूब आनंद लिए, यहां तक कि सीएम ने खुद भी उनकी तरह पहली बार चुनकर आए सदस्यों को सीएम होने जैसा अहसास नहीं करवाया है। आपको याद होगा, पिछले ढाई दशक में दो ऐसे सीएम रहे हैं, जिनके सदन में वरिष्ठ मंत्री तक नजदीक नहीं जा पाते थे, विधायक तो छोड़ ही दीजिए। भजनलाल ने सभी को सहज रखने का काम किया और यह भी जता दिया कि वो जमीन से जुड़े हुए नेता हैं। प्रदेश हित में उनको 10 साल के बच्चे से लेकर मंत्री तक राय दे सकते हैं। सबकी राय मानने वाला सीएम बहुत लंबी पारी खेलता है। स्व. भैरोंसिंह शेखावत जैसे नेता के गुण भी भजनलाल में दिखे, तो अमित शाह जैसी आक्रामकता और नरेंद्र मोदी जैसे कटाक्ष भी खूब मारे। आज भजनलाल देश के सबसे जूनियर मुख्यमंत्रियों में से एक हैं, लेकिन राजस्थान विधानसभा के भीतर बैठे उनके ही वरिष्ठ साथियों को यह अहसास जरूर हो गया होगा कि मोदी-शाह ने सीएम का चुनाव करने में कोई गलती नहीं की है। यह बात सही है कि सीनियर नेताओं को उनके साथ तालमेल बिठाने में काफी दिक्कतें होंगी, लेकिन जैसा तालमेल विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने बिठाया है, वैसा सभी को बिठा लेना चाहिए, क्योंकि भजनलाल ने स्पष्ट कर दिया है कि यदि अवसर मिला तो वो लंबे समय तक राजस्थान की राजनीति में राज करने वाले हैं।

कुछ सीनियर नेता मंत्री हैं, तो कुछ महज विधायक बनकर बैठे हैं। कुछ लोगों का कहना है कि वसुंधरा राजे भी चुप नहीं रहने वाली हैं, लेकिन भाजपा में अब न केवल वसुंधरा राजे का समय बीत चुका है, बल्कि उनका चमत्कार दिखाने का समय भी जा चुका है। यह बात उनको दिल से मान लेनी चाहिए। यही एक बड़े नेता का गुण होता है, कि समय के साथ खुद को ढाल लेना चाहिए। राजस्थान के प्रवेश द्वार भरतपुर में किसान के घर के जन्म, धरती पुत्र से बीजेपी के छात्र संगठन में और उसके बाद युवा मोर्चा से भाजपा की भट्टी में तपकर निकले भजनलाल शर्मा भाजपा का वर्तमान तो है ही, भविष्य भी दिखाई दे रहे हैं। अपने अनुभवों और जमीनी सच्चाई के साथ आगे बढ़ते नजर आ रहे हैं। भजनलाल ने यदि आगे भी इस रास्ते को नहीं छोड़ा तो कुछ समय बाद वही लोग उनके प्रशंसक होंगे, जो आज आलोचना कर रहे हैं। अन्यथा समय बदलते समय नहीं लगता है।

– रामगोपाल जाट,
वरिष्ठ पत्रकार

जनता की सुविधार्थ नगरीय निकायों के नियमों-प्रक्रियाओं में बदलाव-सतत डिजिटल मॉनिटरिंग आवश्यक व कुछ सुझाव

महावीर सिंह

इस लेख का आधार समय-समय पर विभिन्न अखबारों में प्रकाशित समाचार है जैसे--जेडीए में 10 हजार से अधिक पट्टों की फाइलें लंबित--स्थानीय निकायों द्वारा मास्टर प्लान के विपरीत मल्टीस्टोरी बिल्डिंग्स की अनुमतियाँ--कच्ची बस्ती नियमन की धीमी गति--जेडीए व अन्य निकायों मेंऑनलाइन सिस्टम में दक्षिणा बंद तो ऑफलाइन पर जोर-कॉलोनीज में 15 मीटर की जगह 18 मीटर ऊंची इमारते बन रही हैं-कोमर्सियल कॉम्प्लेक्सेज में पास नक्शों के विपरीत पार्किंग एरिया में कोमर्सियल व अन्य निर्माण --लोक सेवा गारंटी अधिनियम की भी कोई पालना नहीं, आदि।

एक पुराने मित्र से, जो निकायों के मामलों में, टाउन प्लानिंग कार्यों से जुड़े रहे थे, उनसे इन समाचारों/अनियमितताओं पर समय-समय पर विस्तार से चर्चा की, कुछ नियमों को भी पढ़ा, जिसके आधार पर, संयुक्त रूप से उनके साथ यह लेख लिखा जा रहा है।

(1) कच्ची बस्तियों में भूखंड पट्टे ::-

1-1-81 से 31-12-21 के बीच के कब्जों का नियमन करने के लिए, समय-समय पर कच्ची बस्तियां अधिसूचित की गई थी। इनमें अहस्तांतरणीय पट्टे जारी किए थे।

जिन बस्तियों में आधारभूत सुविधाएं विकसित हो गई, उन्हें डिनोटिफाइ किया जा सकता है और समय-समय पर घोषित विभिन्न कटऑफ डेट्स तक के शेष कब्जों का नियमन किया जाना चाहिए।

किन्तु समस्या उन कब्जों की है जो बस्ती डिनोटिफाइड होने के बाद हुए अथवा जिस भूखंड का अहस्तांतरणीय पट्टा पूर्व कब्जाधारी ले चुका किन्तु उसने भूखंड किसी दूसरे को बेच दिया अथवा कब्जाधारी का अन्यत्र कब्जा अथवा वैध तरीके से प्राप्त भूखंड-भवन है।

ऐसे कब्जों को, यदि वे बिल्डिंग लाइन में हो, सार्वजनिक हित की भूमियों पर न हों, रहवासी का शहर में अन्यत्र कोई सही या गलत ढंग से कब्जाया मकान/भूखंड न हो तो उनके नियमन पर, उचित कीमत के आधार पर, विचार किया जाना चाहिए।

नियमन की कीमत, निकाय स्तर पर निकाय अश्यक्ष, मुख्य कार्यकारी, नगर नियोजन विभाग का प्रतिनिधि आदि की कमेटी, विभिन्न कॉलोनीज की स्थिति, आगे की संभावनाएं आदि ध्यान में रख कर, तय कर दे।

इन मामलों में सबसे बड़ी समस्या यह होती है कि भूमाफिया इस प्रकार की कॉलोनीज में कब्जे करवाते है और 5,10 रुपए की अत्यल्प कीमत पर अहस्तांतरणीय पट्टे अपने आदमियों को दिलवाकर, उन्हें खरीद लेते है और मिलीभगत से रिकार्ड में हेराफेरी करवाकर, उस भूमि को सरकारी भूमि बता कर नए सिरे से पट्टे लेते हैं।

(2) धारा 69(क)के दुरुपयोग से उतपन्न समस्याएं::---इस धारा के प्रावधानों के अनुसार, यदि निकाय सीमा में किसी व्यक्ति के पास वैध गैर कृषि भूमि है तो वह उसे निकाय को सरेंडर कर,पट्टा ले सकता है।

विभाग नें 27/9/21 को एक आदेश जारी किया जिसके अनुसार मात्र कब्जे को भूमिधारित करने का साक्ष्य मान कर कच्ची बस्तियों व सरकारी भूमियों पर, धारा 69(क) के अंतर्गत पट्टे जारी किए गए, जो अवैध हैं।

धारा 69 (क) के अन्तर्गत केवल वही मामले आने चाहिए जहां या तो राजस्व रिकार्ड में ऐसा गैर कृषि कब्जा दर्ज हो या किसी न्यायालय के किसी आदेश से या राजकीय विभाग में दर्ज निजी स्वामित्व की भूमि हो ।

इस श्रेणी की भूमियों के कब्जे प्रीमियम लेकर (दरें तय करने के लिए निकाय स्तर की स्थानीय कमेटी बने) नियमित करने पर विचार किया जाना चाहिए बशर्ते अन्य किसी विधिक या नगर नियोजन की दृष्टि से आपत्ति न हो।

(3) भू राजस्व अधिनियम की धारा 90(क) के अंतर्गत गैर कृषि उपयोग की भूमियों का नियमन::--

खातेदारी की कृषि भूमि पर हुए निर्माणों के नियमन के लिए यह धारा लाई गई है। इन भूमियों पर निर्माण को नियमन के लिए नियम बने हुए है किंतु इस कार्य में दो प्रमुख समस्याएं हैं:- (1) भूमि का मास्टर प्लान में अन्य उपयोग जैसे की सड़क या अन्य उपयोग के लिए होना। (2)विद्युत लाइंस का भवनों के ऊपर से जाना।

मास्टरप्लान की दिक्कत निकाय अपने स्तर पर जोनल प्लान बनाएं और राज्य सरकार से अनुमोदित कराएं।

विद्युत लाइन की सम्बंधित समस्या के लिए निकाय अपने स्तर पर सम्बंधित अधिकारियों के मध्यम से निराकरण करावें।

(4) भवन मानचित्र, नाम से हस्तांतरण, भवन मानचित्र, भूखंड, उपविभाजन, भूखंड एकीकरण के मामले::-

इन कार्यों के लिए, नित्यप्रति सैंकड़ों आम आदमीयों का नगरपालिकाओं-परिषदों व नगर विकास न्यास -प्राधिकरणों से वास्ता पड़ता है।इन कार्यों के लिए विहित प्रक्रियाओं का ओर सरलीकरण किया जाना जन हित में आवश्यक है।

नाम हस्तांतरण के लिए अंतिम क्रेता/या अन्य विधिक माध्यम से स्वामित्वधारी, निर्धारित शुल्क की गणना आवेदक स्वयं करलें, पूर्व पट्टे व चैन दस्तावेजों की प्रतियां साथ लगा के,आवेदक शुल्क निकाय में / से जमा करवा के,उसकी प्रति आवेदन के साथ लगा कर, ऑनलाइन/ऑफलाइन जमा करवादे। इसका निस्तारण एक निश्चित अवधि 3/5/7 दिन तय कियाए और स्वीकृति/कमी पूर्ति की सूचना आवेदक को हेल्पलाइन से इस अवधि में मिल जाए।

योजना/ गैर योजना क्षेत्र में पंजीकृत दस्तावेजों के माध्यम से उपविभाजन/पुनर्गठन के मामले:-

इसके लिए आवेदक, सम्बंधित 1975 के नियमों के अनुसार उपविभाजित/पुनर्गठित भूखंड का प्लान निकाय में पंजीकृत नक्शानवीश/वास्तुविद से अनुमोदित नक्शे के साथ, निर्धारित फीस/शुल्क / से निकाय में जमा करवाकर, सादा पेपर पर ऑनलाइन/ऑफलाइन आवेदन कर दें। स्वीकृति/कमी/अस्वीकृति की सूचना आवेदक को 3/5/7 दिन की निर्धारित अवधि में दी जाए। इसी प्रकार की प्रक्रिया व समयावधि भवन निर्माण के प्रार्थना पत्रों की अनुमति देने के लिए अपनायी जा सकती है।

(5) हाई राइज/मल्टी स्टोरिड बिल्डिंग्स व पार्किंग के सम्बंध में, नियमों की अवहेलना के सम्बंध में लगातार शिकायते/नियमों की अवहेलना के समचत आते ही रहते है।

पूर्व में निकायों द्वारा अनुमोदित आवासीय कॉलोनीज में,मल्टी स्टोरिड बिल्डिंग्स की अनुमति देते समय इस बात का ख्याल रखा जाना अत्यावश्यक है कि कॉलोनी में पूर्व में विकसित आधारभूत सुविधाओं यथा पानी, बिजली, सीवरेज आदि पर कोई प्रतिकूल असर तो नहीं पड़ेगा। इसके साथ ही पर्याप्त रोशनी, हरियाली की उपलब्धता भी देखी जानी आवश्यक है।

इन कॉलोनीज में कोमर्सियल कॉम्प्लेक्सेज बनाना वैसे तो नगरनियोजन के सामान्य सिधान्तो के विपरीत है किंतु किन्ही अज्ञात कारणों (जो जनता को ज्ञात होते है) से ऐसा किया जाता है तो पार्किंग की माकूल व्यवस्था के प्रावधान नक्शे में किए जाए और इससे भी ज्यादा आवश्यक है उनकी कठोरता से पालना, जिसका सर्वत्र अभाव दिखता है। इन कॉमर्सियल कोमपलेक्सेज में काम करने वालों के वाहन आवासीय कॉलोनियों की गलियों में, ट्रैफिक बाधित कर, खड़े रहते है।

अव्यवस्थित व शहरी यातायात में भारी व्यवधान उतपन्न करने वाली एक ओर बड़ी समस्या है निर्धारित कोमर्सियल स्थानों पर बने कोमर्सियल कॉम्प्लेक्सेज। इनके भूतल या उस से नीचे की मंजिल पर पार्किंग के प्रावधान नक्शों में तो किए ही जाते होंगे किन्तु हकीकत में बहुत बड़ी संख्या में इन जगहों में पार्किंग के बजाय व्यवसायिक गतिविधियां चलती है। उसका प्रथम दुष्प्रभाव होता है--यहां काम करनेवालों को वाहन अन्यत्र सार्वजनिक सड़कों या अन्य स्थानों पर खड़े करने ही पड़ते है।

इन कोमर्सियल कॉम्प्लेक्सेज में आने वाले कस्टमर्स के जितने भी वाहन आते है उनके भी सारे वाहन सड़को पर ही खड़े रहते है। इस समस्या का निदान करना आवश्यक है--या तो ओपन सार्वजनिक पार्किंग निकाय बनाएं या कोमर्सियल कॉम्प्लेक्सेज के मालिकों से बनवाए या इन कॉम्प्लेक्सेज में भू तलों में पार्किंग की व्यवस्था व संधारण करवाए। निकाय स्वीकृत नक्शों के अनुसार निर्माण हुआ या नहीं, कॉम्प्लेजसेज में बनाई गई पार्किंग सुविधा आदि की समय-समय पर मोनिटरिंग करे, सतत सघन निरीक्षण आवश्यक है।

–महावीर सिंह,.
पूर्व आईएएस व बच्चू सिंह
सेवानिवृत्त सहायक नगर नियोजक

अनुकूल मौसम व पर्याप्त बारिश की वजह से किन्नू का बम्पर उत्पादन

बांग्लादेश, नेपाल में निर्यात कम होने से तीन गुना टूटे किन्नू के भाव

- **इस साल 3 लाख 80 हजार मीट्रिक टन किन्नू उत्पादन का अनुमान है**
- **इस बार किन्नू 8 से 12 रुपए प्रति किलोग्राम तक बिक रहा है**

श्रीगंगानगर, (निसं)। इलाके में इस बार अनुकूल मौसम व पर्याप्त बारिश की वजह से किन्नू का बंपर उत्पादन हुआ है। साथ ही जिले में कड़ाके की सर्दी से श्रीगंगानगरी किन्नू में मिठास बढ़ गई। इस साल 3 लाख 80 हजार मीट्रिक टन किन्नू उत्पादन का अनुमान है। इसके के चलते किन्नू के भाव पिछले साल की तुलना में तीन गुना कम मिल रहे हैं। इसके चलते करीब पचास फीसदी किन्नू अभी बागानों में पड़ा हुआ है। दो साल से बांग्लादेश किन्नू निर्यात को ट्रेन नहीं चलने व यहां कोई प्रोसेसिंग प्लांट नहीं होने के कारण यह स्थिति बन रही है। गत वर्ष तीन गुना से भी अधिक उत्पादन कम रहा था।

किसानों ने बताया कि पिछले वर्ष इस समय किन्नू का भाव 25 से 30 रुपए प्रति किलोग्राम तक बिक रहा था। जबकि इस बार 8 से 12 रुपए प्रति किलोग्राम तक बिक रहा है। जबकि खुले बाजार में किन्नू पिछली बार 35 से 50 रुपए जबकि इस बार 10 से 15- 20 रुपए किलोग्राम तक मुश्किल से पहुंच पाया है। श्रीगंगानगर और पड़ोसी राज्य पंजाब के अबोहर क्षेत्र के बागों में इस बार 25 हजार हैक्टेयर में किन्नू की बागवानी है। किन्नू उत्पादक संघ के व्यापारियों का कहना है कि इस बार मुश्किल से दस फीसदी किन्नू ही बाहर भेजा जा सका है।

तीन साल पहले श्रीगंगानगर से किन्नू स्पेशल ट्रेन से किन्नू बांग्लादेश निर्यात किया गया था। किन्नू व्यापारियों ने बताया कि जबकि इस बार किन्नू व्यापारियों के लिए बहुत बड़ा संकट खड़ा हो गया था। इस बार बांग्लादेश में किन्नू निर्यात नहीं हो पाया। किन्नू व्यापारियों ने बताया कि इस बार बांग्लादेश में किन्नू की इम्पोर्ट ड्यूटी 87 रुपए प्रति किलोग्राम है। तब इम्पोर्ट ड्यूटी 35 रुपए प्रति किलोग्राम थी। जिले में किन्नू का बंपर उत्पाद है जबकि यहां पर प्रोसेसिंग प्लांट तक नहीं है। इस कारण किसानों को किन्नू का अच्छा भाव नहीं मिल पाता है।

किन्नू उत्पादक किसान विकास भादू का कहना है कि इस बार किन्नू आठ से लेकर 12 रुपए प्रति किलोग्राम तक बिक रहा है, जबकि पिछली बार इन दिनों 25 से 30 रुपए प्रति किलोग्राम तक बिक रहा था।

दक्षिणी राज्यों के अलावा नेपाल के लोगों को भी गंगानगरी किन्नू का स्वाद भाता है। तमिलनाडु के कोयंबटूर, मदुरै, केरला के विभिन्न शहरों, आंधप्रद्रेश के हैदराबाद, विजयवाड़ा, महाराष्ट्र के मुंबई, नासिक, उत्तर प्रदेश के मेरठ, लखनऊ, कर्नाटक के बेंगलूरु, गुजरात के अहमदाबाद, सूरत, बड़ौदा, मध्यप्रदेश के इंदौर और भोपाल में गंगानगरी किन्नू की सप्लाई होती है। वहां से अन्य शहरों में किन्नू भेजा जाता है। किन्नू की खेती सिर्फ राजस्थान के जिलों में ही नहीं, बल्कि पड़ोसी प्रदेश पंजाब के अबोहर, फिरोजपुर, मुक्तसर, बठिंडा, होशियारपुर व मलोट आदि क्षेत्र में भी हो रही है। यहां की भूमि किन्नू के लिए मुफीद है।

श्याम लाल बगड़िया, पूर्व सचिव गंगानगर किन्नू संघ का कहना है कि श्रीगंगानगर और पंजाब के अबोहर क्षेत्र में किन्नू का बंपर उत्पादन है लेकिन श्रीगंगानगर में किन्नू का औसत भाव 7 से 8 रुपए प्रति किलोग्राम होने से मंदा ही चल रहा है। इसका मुख्य कारण बांग्लादेश में किन्नू निर्यात बहुत कम हुआ है।

साक्षात्कार का नौवां चरण पांच से

अजमेर, (कासं)। राजस्थान लोक सेवा आयोग द्वारा पशु चिकित्सा अधिकारी (पशुपालन विभाग) भर्ती 2019 के पदों के लिए साक्षात्कार का नौवां चरण 5 फरवरी से 7 फरवरी 2024 तक आयोजित किया जाएगा। अभ्यर्थियों के साक्षात्कार-पत्र आयोग की वेबसाइट पर यथा समय अपलोड कर दिए जाएंगे। आयोग सचिव ने बताया कि नौवें चरण में 162 अभ्यर्थियों के साक्षात्कार का आयोजन निर्धारित कार्यक्रमानुसार किया जाएगा।

347 पदों पर भर्ती का विज्ञापन जारी

अजमेर, (कासं)। राजस्थान लोक सेवा आयोग द्वारा बुधवार को संस्कृत शिक्षा विभाग में 6 विषयों हेतु वरिष्ठ अध्यापक के कुल 347 पदों पर भर्ती का विज्ञापन जारी किया गया है। शैक्षणिक योग्यता, वर्गवार वर्गीकरण, आवेदन प्रक्रिया एवं अन्य जानकारी संबंधी विस्तृत सूचना आयोग की वेबसाइट पर उपलब्ध है। आयोग सचिव ने बताया कि उक्त पदों के लिए ऑनलाइन आवेदन 6 फरवरी से 6 मार्च 2024 की रात्रि 12 बजे तक किए जा सकेंगे। ऑफलाइन आवेदन स्वीकार नहीं किए जाएंगे।